मेल्बोर्न (आस्ट्रेलिया)
सितम्बर ३०, १९९९

सन्देश संख्या १६
शंकाओं में नहीं वरन् संधान में रहें

क्रियायोग की अनुभूति से यही प्रतीत होता है कि चित्तवृत्ति तथा इसके उपद्रवी मायाजाल द्वारा उत्पन्न संहार और विनाशकारी तत्वों की समाप्ति के फलस्वरूप शुद्ध चेतना का उदय ही बाइबिल का पुनरूत्थान (रिसरेक्शन) है। तब वहाँ शुरू होती है गहन प्रज्ञा के साथ एक जबरदस्त जीवन्त प्रक्रिया जिसमें है एक रोमांचक स्पन्दन एवं मंगलमय आशीर्वाद के साथ जीवन की एक धड़कन। तब उत्पन्न होती है सौन्दर्यमय एवं परमानन्दमय अवस्था की स्थिति जो कि आपकी खोटी धारणाओं एवं धर्मान्धताओं, आपकी तुच्छ कहानियों, अनुमानों, कल्पनाओं, अटकलबाजियों तथा अन्धविश्वासों के परे है। यही वस्तुतः है वह पुनरूत्थान (रिसरेक्शन) जो कि क्रियायोग का लाहिड़ी महाशय–लय है। कृपया इसे समझें तथा आध्यात्मिक मण्डी में इधर–उधर की खरीददारी को बन्द करें। पुष्प की भाँति इस प्रकार जीवनयापन करें जो कि अप्रमेय, अनाममय तथा अज्ञेय की एक जीवन्त अभिव्यक्ति है।

व्यर्थ शंकाओं में न उलझें बल्कि संधान में लगें। आध्यात्मिक धूर्तों तथा धार्मिक माफियाओं द्वारा सृजित धर्मशास्त्रीय प्रश्नों और उत्तरों के दलदल में न फँसें। संधान में रहना विभेदकारी चित्तवृत्ति के बाहर प्रज्ञा एवं शुद्ध चेतना में रहना है और प्रश्नों के साथ होना चित्तवृत्ति की शरारतों एवम् उन्मत्तता में लिप्त होना है। संधान क्रिया है, प्रश्नात्मकता हलचल अर्थात् प्रतिक्रिया है। आपके समस्त अनुभव चाहे वे धार्मिक हों अथवा अन्य आपके दुःख के मूल कारण हैं। यथार्थ अवलोकन विचारों की निरन्तरता को न कर देता है और आप अपने समस्त अनुभवों तथा ''अहंभाव'' से कुछ समय के लिए मुक्त हो जाते हैं। यह है लाहिड़ी क्रिया का ''परावस्था सन्तुलन'' तथा यही है व्यावसायिक योग के संगठित निकृष्ट मानसिक प्रदूषण से मुक्ति। ईश्वर के लिए कृपया अपंग सांत्वनाओं एवं तुष्टीकरण से बाहर आयें जिन्हें आपने ईश्वर और अन्य भ्रान्तियों की मानसिक अवधारणाओं से प्राप्त किया है।

क्रियायोग कर्म–बन्धन नहीं बल्कि कर्मकाण्ड से मुक्ति है। क्रिया मान्यता के आवरण में छिपना नहीं बल्कि यथार्थता में प्रवेश के लिए ऊर्जा का आमन्त्रण है।

लाहिड़ी–श्रुति अमर रहे।